

पद ६६

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

रूह पुरनूर आज देखा मैं यारका । जानो गोला माहे आफताब
सद अंगारका ॥१॥ दीन दुनियाके हजारो तमाशे । समझा है क्या
पैदा वहाँसे ॥२॥ माणिक बंदा देख वजूदकुभूल गया । अब परवाह
नहीं है आपकी, बहाना हो गया ॥३॥